राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

ऐक्यं द्वयोर्न यावत् स्याद्, विद्वेषश्च मिथो भवेत् ।
तावत् सदा तृतीयस्य, सिध्येदिष्टमसंशयम् ॥१०४॥

जब तक दो के बीच एकता न हो और आपस में द्वेष बना रहे, तब तक तीसरे व्यक्ति का इष्ट सिद्ध होगा ही । इसमें कोई सन्देह नहीं ।

There is no doubt that until there is unity and no dispute between the two people the third person will prosper (have his work done).

ओषधेर्गुण-गानेन, व्याधिर्नश्यते न क्वचित् ।
सेवितैवोषधिः शक्तो, व्याधि-निर्मूलने सदा ॥१०५॥

बीमारी सिर्फ दवा का गुणगान करने से ही कभी समाप्त नहीं होती । ली हुई ही दवा बीमारी को जड़ से उखाड़ फेंकने में समर्थ है ।

The disease will never disappear by glorifying the medicine. Only by taking medicine disease is uprooted.

कथनी करणी यस्य, नैकरूपा कदाचन ।
असौ किं कथनीयः स्याद् ? इदं विज्ञायते नहि ॥१०६॥

जिसकी कथनी और करणी एक रूप वाली न हो, उसको क्या कहा जाय? यह समझ में नहीं आता ।

What can be said for the one whose words and work are not the same? I don't understand this.

कदापि तादृशं कर्म, कर्तव्यं न प्रशासकैः ।

यस्यानुकरणं कृत्वा, जनता स्यात् कुमार्गगा ॥१०७॥

कभी भी वैसा काम प्रशासकों को नहीं करना चाहिये, जिसका अनुकरण करके जनता कुमार्ग–गामिनी बन जाय ।

The administration should never do such kind of work which, by following which the people will go on the wrong path.

कर – चौर्यं महापापं, देशं तत् क्षिणोति हि ।

गृहीत्वाऽपि करान् पूर्णान्, रक्षणीया प्रजा सदा ॥१०८॥

करों की चोरी करना महान् पाप है, क्योंकि वह करों की चोरी देश को क्षीण बनाती है । पूरे कर ग्रहण करके शासकों को भी प्रजा की सदा रक्षा करनी चाहिये ।

Stealing of the taxes is the great sin as it makes a nation weak. By getting the full tax citizens should be always protected.

कर्गदेन च लेखन्या, सार्धं यदि परिस्थितिः ।

अनुकूला मिलेत् तर्हि, किं लेखो न प्रभावकृत् ? ॥१०९॥

कागज और कलम के साथ यदि परिस्थिति अनुकूल मिल जाये तो क्या प्रभावकारी लेख तैयार नहीं हो जाय ?

Isn't it possible to write an influential/impressive/powerful story if the pen and paper meet the right circumstance?

कर्तव्यो न व्ययो व्यर्थः, सञ्चेतव्यं धनं ननु ।

सङ्कटे धनमेवैकं, त्राणकर्तृ च सौख्यदम् ॥११०॥

व्यर्थ खर्च नहीं करना चाहिये । धन निश्चित ही सञ्चित करना चाहिये । संकट में एक धन ही रक्षा करने वाला और सुखदाता होता है ।

Wasteful expenditure should be avoided. Money/wealth surely should be accumulated. In the time of need, only money/wealth can protect and give relief.

कर्मचारी न चेत् तुष्टः, स्वामिनो व्यवहारतः ।

स्वामिनोऽभीप्सितं तर्हि, न सिध्यति, न सिध्यति ॥१११॥

यदि स्वामी के व्यवहार से कर्मचारी सन्तुष्ट नहीं रहता, तो स्वामी का भी अभीप्सित सिद्ध नहीं होता, सिद्ध नहीं होता ।

No any work of a master will be successful if the servants are not satisfied with his behaviour.